r I 1_16. d

Fatihatil Kitab sebi ajet

Vide Maracc. pag. 1
Sura prima legens

فاتحة الكتاب سبع آيات

بسم الله الر

حمن الرحيم

الحمد لله ر

bismillahi er-
errahim
rahman errahim

el hamdu lillahi

1 Bl. – Aufschrift der
Sur. 1. und Anfang
des v. 1.

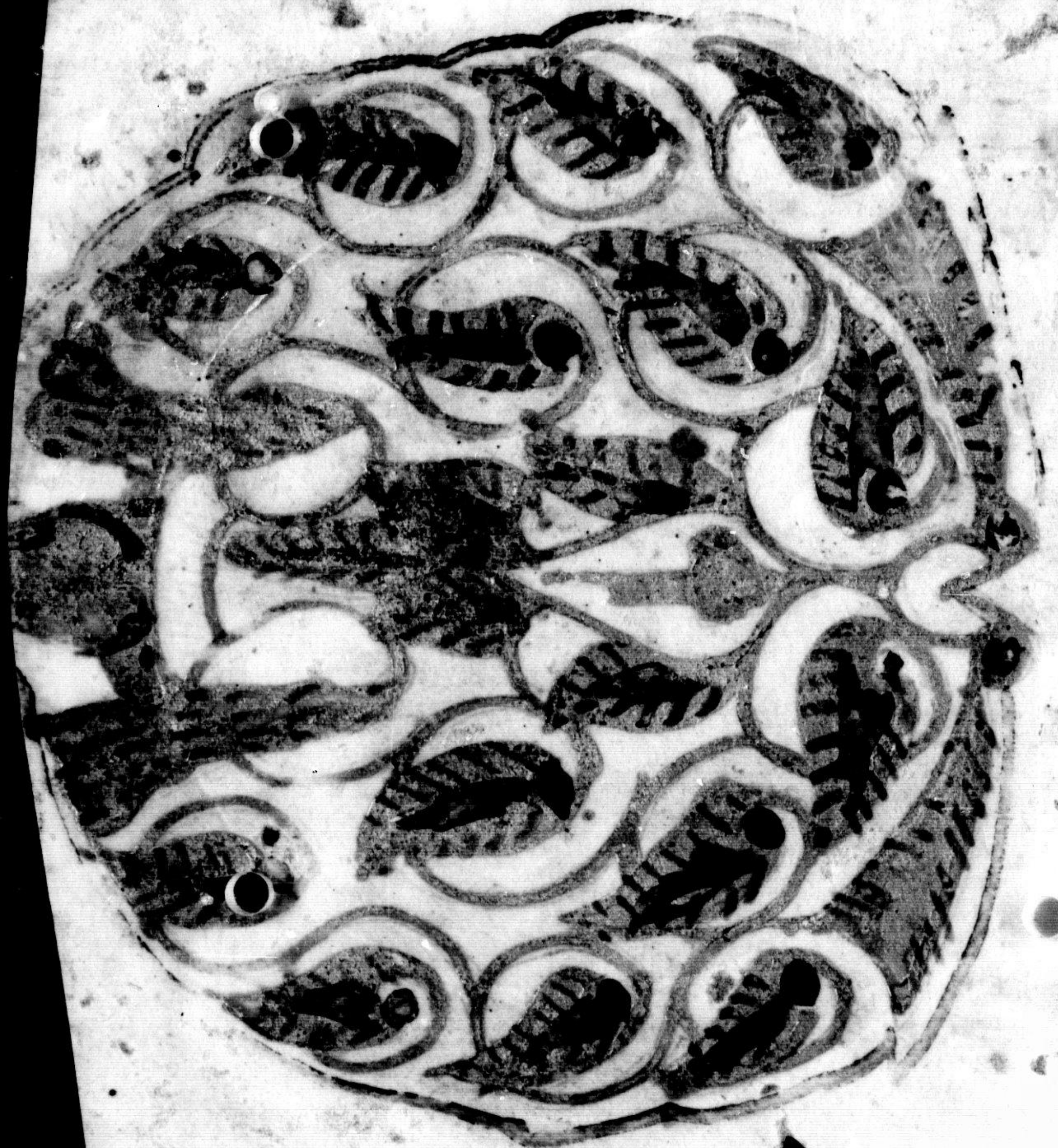

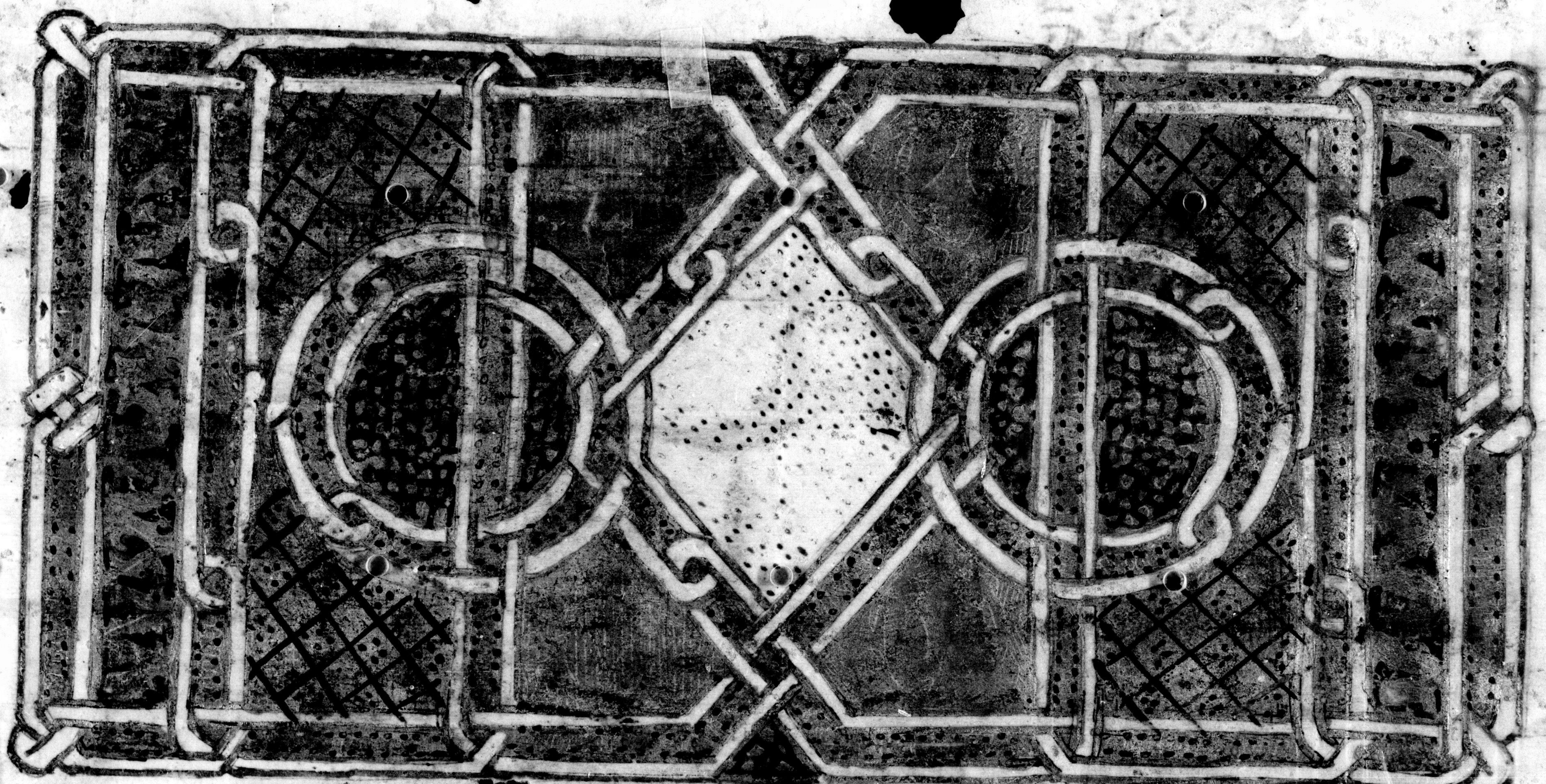

Cod. Mixt. 814

2 III. i.

vid. Maracc. pag: 120. ...
3a linea 3a in 82do ajet. ... ...
... 86 ajet.

m

سلم من فى السمو
ت والارض
طوعا و
كرها واليه ير
جعون قل امنا بالله
وما انزل علينا و
ما انزل على ابره

2 Bl. – Sur. 3. v. 77 bis 88.

هم واسمعيل وا
سحق ويعقوب و
الاسباط وما
اوتى موسى وعيسى
والنبيون من ربهم
لا نفرق بين احد
منهم ونحن له مسلمو

II.2.

يلتفت منكم احد الا
امراتك انه مصيبها
ما اصابهم ان موعد
هم الصبح اليس الصبح
بقريب فلما جا امرنا
جعلنا عليها سافلها
وامطرنا عليها حجارة

ا ان الرسول حق
وجاهم البينت
والله لا يهدى
القوم الظلمين
اوليك جزا
وهم ان عليهم
لعنة الله والمليكة

3. III.

vide Marau. P. 222. lin. 2
Surae 5tae Versu 120 comm[illegible]
in meo 41 ajet.

n

اليه الوسيله
وجهدوا فى
سبيله لعلكم تفلحون ۝
ان الذين كفروا
لو ان لهم ما ف

1 Bl. Sur. 5. v. 39 bis 40.

الارض جميعا
ومثله معه ليفتدوا
به من عذاب
يوم القيمة ما
تقبل منهم ولهم

Cod. Mixt. 814

14 IV.

[illegible]

حبس [illegible]
[illegible] على [illegible]
المسلمين [illegible]
اربعين ولا يباع [illegible]
[illegible] ولا يورث
ولا [illegible]
[illegible]
[illegible]
بعدما سمعه فانما
اثمه على الذين يبدلونه

1 Bl. Sur. 5. v. 86.

Nationalbibliothek Wien

Cod. Mixt. 814

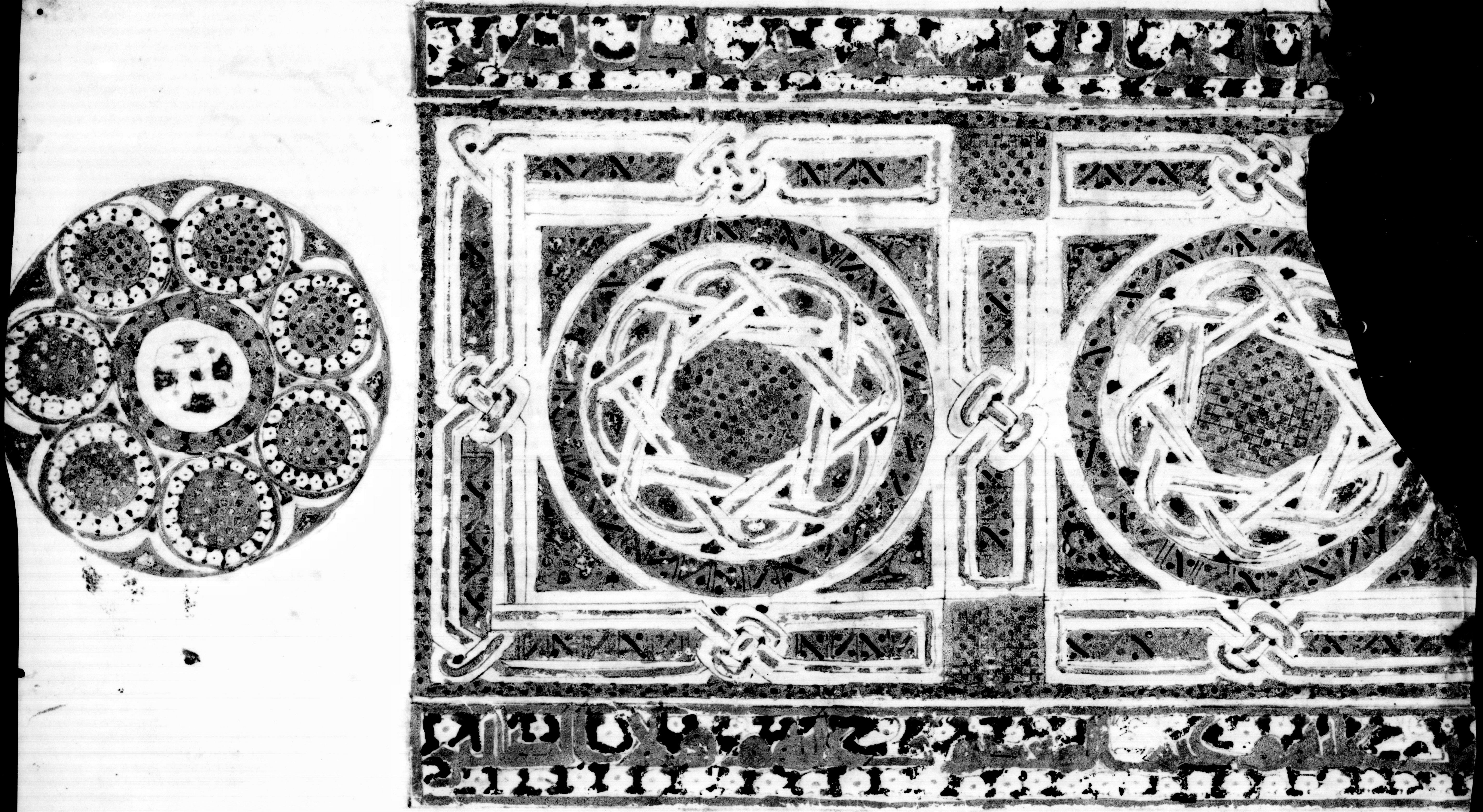

V. i.

A

1.

جئت شيا فريا. يا ا
خت هرون ما
كان ابوك امرا
سو وما كانت امك
بغيا. فاشا

6 Bl. a. b. c.
a. 1 Bl. Sur. 19. v. 28 bis 31.

Pag. 1-2. Marracci Sura XIX 26-29. pag. 431.

2

سا ں ٮا لقسط
لا ا ٮكلف ٮفسا
فو كا ں دا العرٮ
ى حسا ها د ٮ ى
كم ٮ لله ا ايه

Cod. Mixt. 814

ا قل لكم لو لا
تسبحون ۝ قالوا سبحـ
ـن ربنا انا كنا ظلمين ۝
فا
قبل بعضهم على
بعض يتلومون ۝

Pag. 3–8. Marracci Sura LXVIII 29–42 pag. 740–741
b. 3 Bl. Sur. 68. v. 28–41.

4

قالوا يا ويلنا

انا كنا طاغين ۝

عسى ربنا ان يبد

لنا خيرا منها

انا الى ربنا ر

بون ۝ كذلك
العذاب ولعذ
اب الاخـ
ـرة اكبر لو كا
نوا يعلمون ۝ ا

ن للمتقين عند ر
بهم جنت النعيم ۝
افنجعل المسلمين كا
لمجرمين ۝ ما لكم كيف
تحكمون ۝ ام لكم

الرحيم الحاقة
ما الحاقة وما
ادرىك ما الحا
قة كذبت ثمود
وعاد بالقارعة

حسن
موصوف
كريم
[illegible]

Pag. 9–12. Marracci Sura. LXIX. 1–11. pag. 744.

c. 2 Bl. Sur. 69. v. 1 bis 11.

فاما ثمود فاهلكو
ا بالطاغية واما
عاد فاهلكوا
بريح صرصر عا
تية سخرها عليهم سبع

لا و نصف ا با ي

ـلسو طا فو و القو

ف فها صر حي كا

تمص ان حا م علا

و بي قهار ب و القمر

باقيه ۝ وجا فرعو
ن ومن قبله ۝ والمو
تفكت بالخاطئه فعصو
ا رسول ربهم فاخذهم
اخذه رابيه ۝ انا لما طغا

V. 4.

7.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Cod. Mixt. 814

م القيمه ان لكم
لما تحكمون ۝ سلهم ا
يهم بذلك زعيم ا ۝
م لهم شركا فليا تو
ا بشركايهم ان كا

VI.

h

vii Maran = pag. 310. auf der Surdu Tewbe 9te medeny=
=mietun we Selasine ajet
130 ajet.

27te der vorletzte Jüzu
Salavat. im 101te
ajet.

6

National Bibliothek

Cod. Mixt. 814

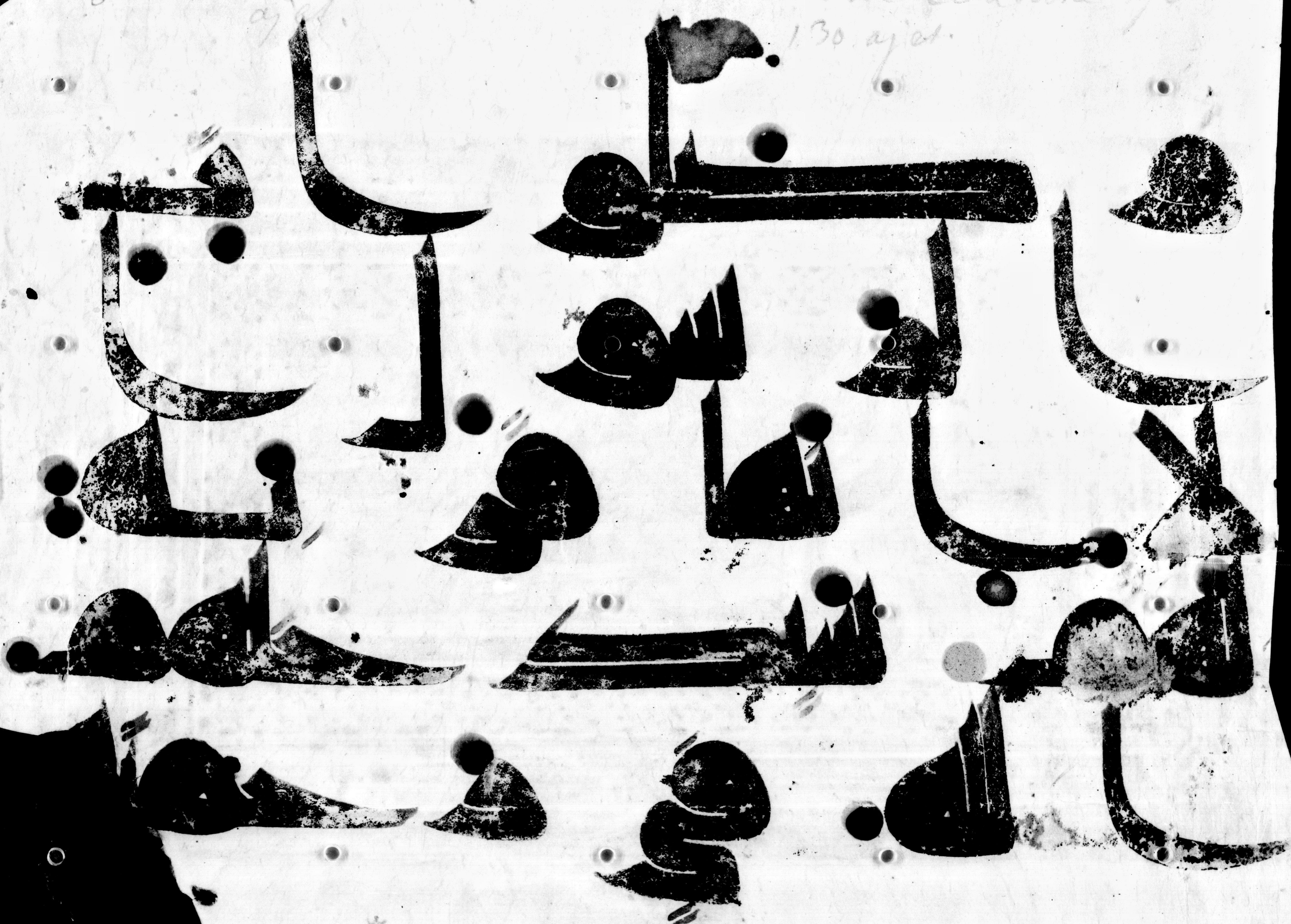

في رحمة ان الله

1 Bl. Sur. 9. v. 100.

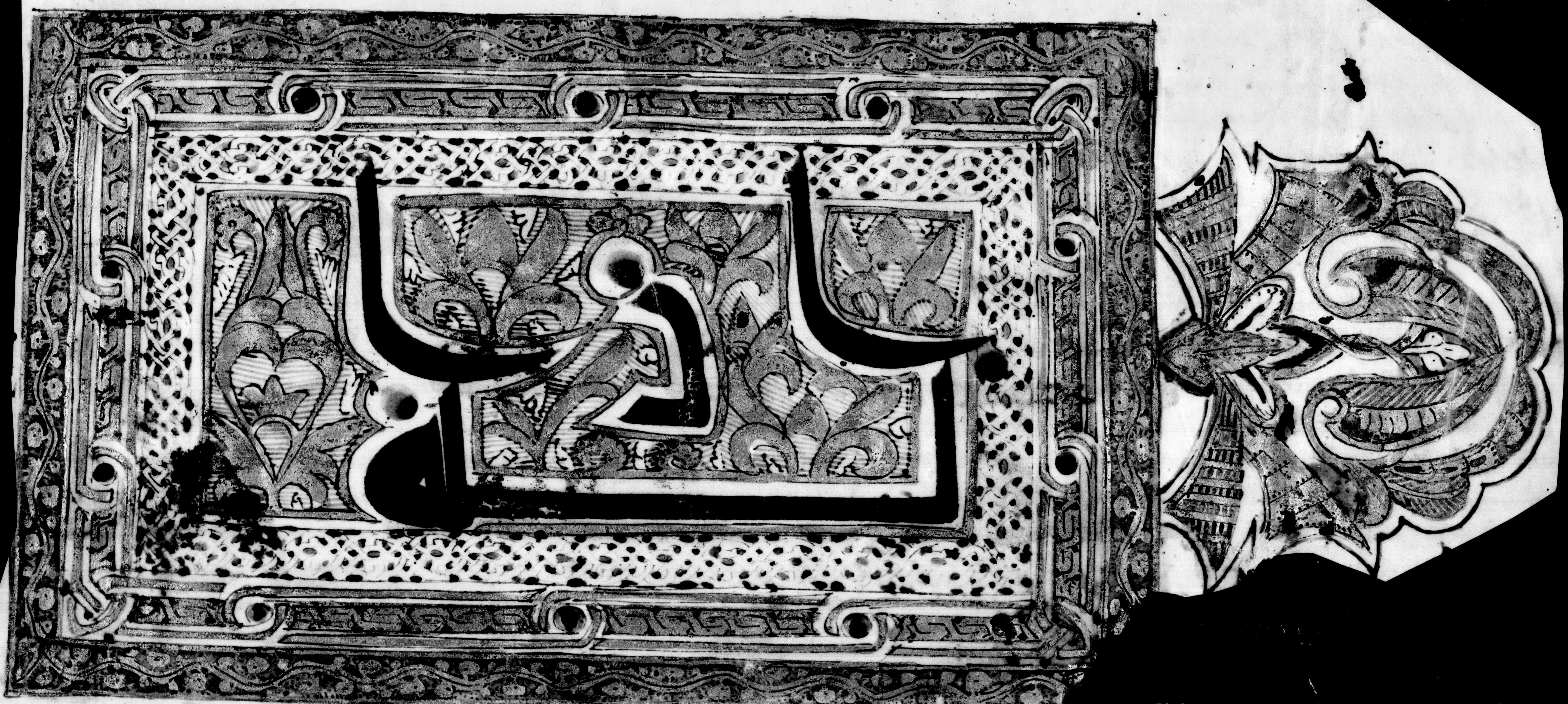

انّ اللّه

in̄ allahe

VII. [illegible] Sura 14. Ibrahim

[illegible]

Ibraim chamsune wa ethea

1.

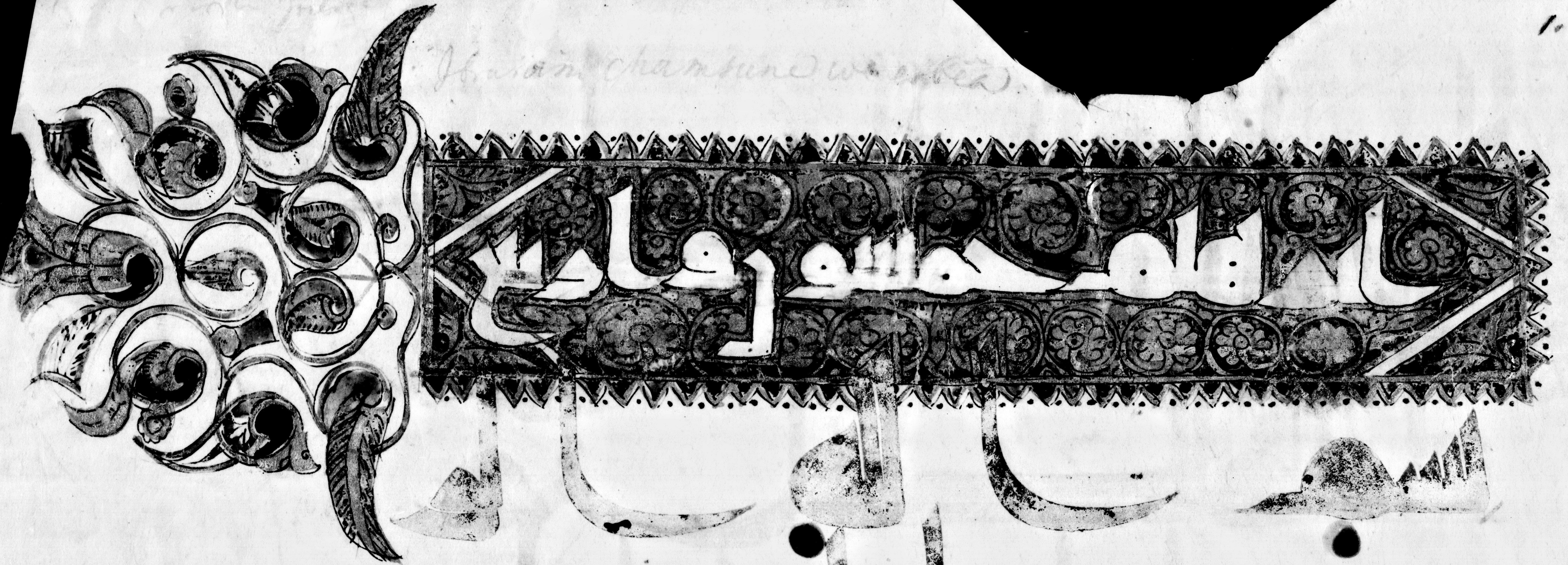

بسم الله الرح

من الرحيم

الر كتب

1 Bl. Sur. 14. Aufschrift
und v. 1.

[illegible]

[illegible]

من [illegible]

[illegible]

[illegible]

Cod. Mixt. 814

VIII.

8

Sura 17. Marac. p. 403.

[illegible]

بسم الله الرحمن
الرحيم سبحن الذ
ى اسرى بعبده
ليلا من المسجد

Cod. Mixt. 814

1 Bl. Sur. 17. Aufschrift
und v. 1.

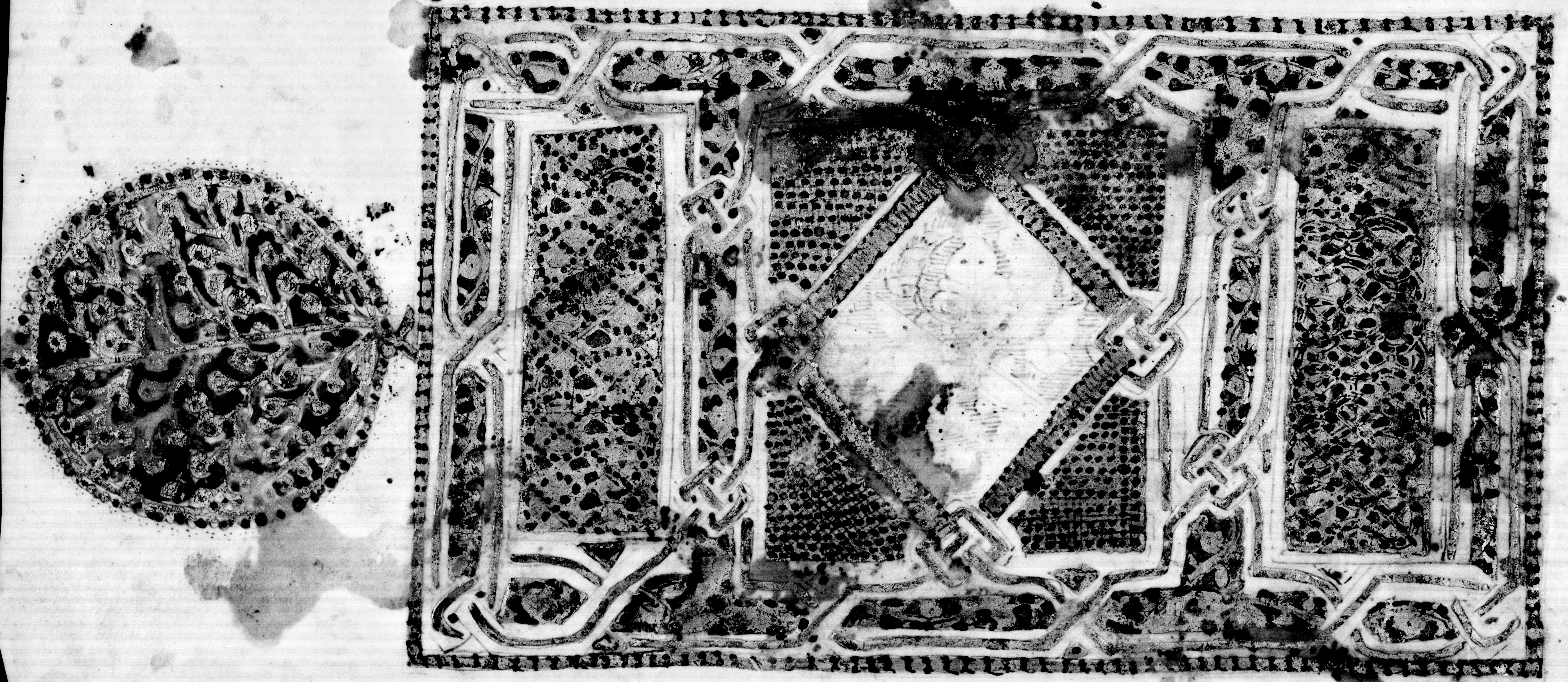

91 **IX.** a

Cod. Mixt. 814

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1 Bl. Sur. 33. v. 57.

National-Bibliothek

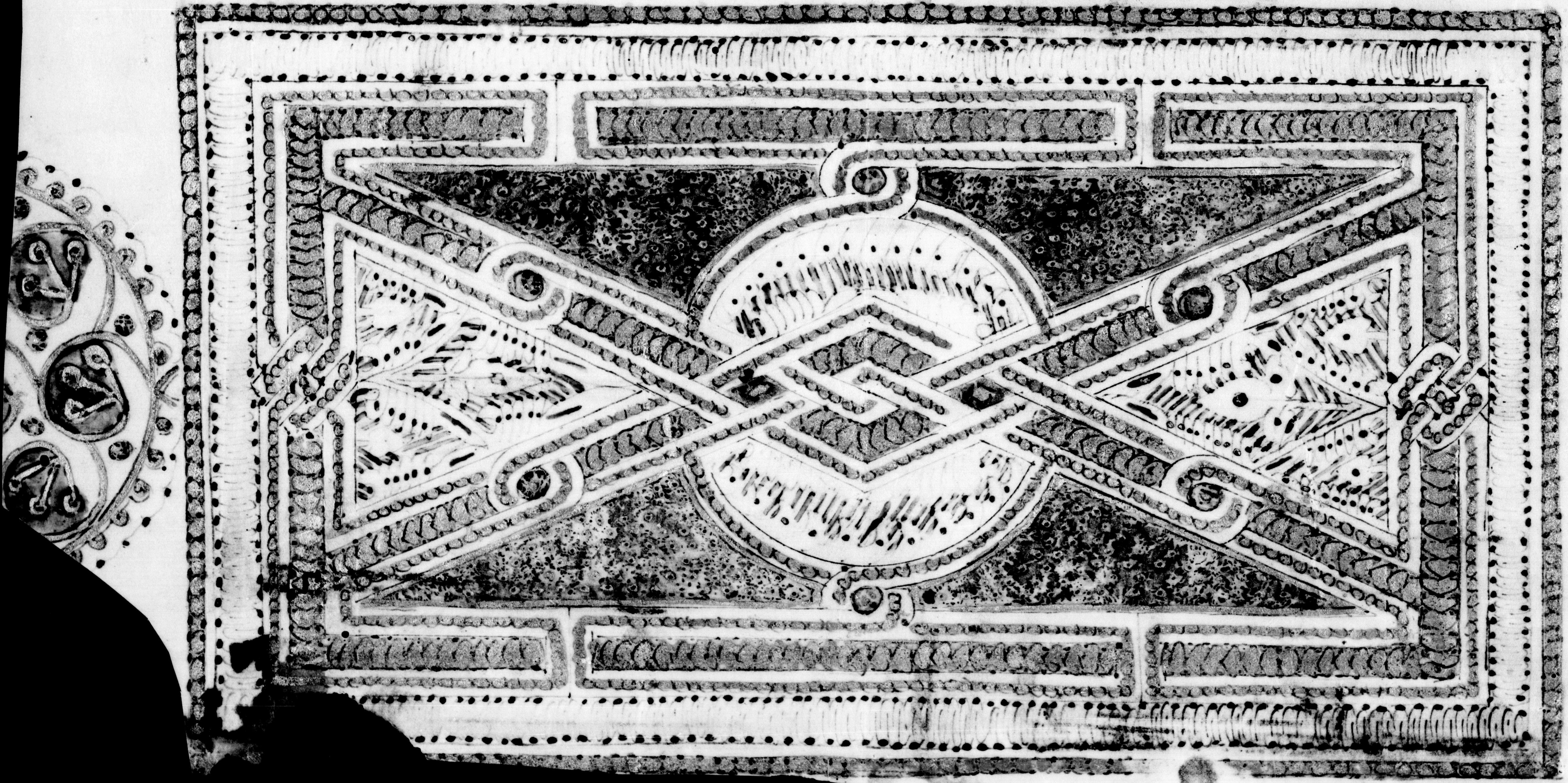

70 X.

vide Marac. p. 611. ajet Sura 40. ajet. 40. Lieven [illegible] 25. [illegible] Aucam 27.

K.

jâ Kâ

jâ Kawmi

يقوم انما
هذه الحيوة
الدنيا
متع وان
الاخرة هى

1 Bl. Sur. 40. v. 42-43.

كن هن

لقهن ه ۝ فـ

نعمل سبق فلا

حتى ى ل لا

بطا و فر بعمل

Cod. Mixt. 814

National-Bibliothek Wien

١٢. XI.

vid. Marac: pag: 612. Sura 40. ajet. 46. Aies 4.

[illegible]

Illeh

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1 Bl. Sur. 40. v. 48 -

Cod. Mixt. 814

National-Bibliothek Wien

ب ۝ النا
ر يعرضو
ن عليها غد
وا وعشيا
ويوم تقوم

XII.

12.

Vide Maragi p. 635. Linea 2?

Sura 43ª ajet 86.

منون فاصفح عنهم

وقل سلم فسوف

يعلمون سورة الدخان

بسم الله الرحمن

jeume nun

ve kul selamun fe sevfe jealemun

Suretu'i duchan chamsune we sebaʿ.

Bismillahi errahman errahim

1 Bl. Sur. 43. v. 89.
bis Sur. 44. v. 3.

الرحيم حم والكتب

المبين ۝ انا انزلنه

في ليله مبركه

انا كنا منذرين ۝

فيها يفرق كل امر

Cod. Mixt. 814

13.

26

للبشر ۝ عليها تسعة

عشر ۝ وما

جعلنا اصحـ

ـب النا

ر الا ملئكة

ajet 31

Lil beser
De Marac
pag: 760.
linea 9na
Sura 74ta

XIII. 1.

2 Bl. Sur. 74. v. 29.
bis Anfang des
v. 33.

وطا سٮلا ٮـ

ٮعمه ں لا ڡٮٮه

لك د ـعـ

وں لىسعڡر ں

لك ر ں ٮو و

XIII.2.

لوا بـــــــــن

لكـــــ لا ن و لو

ن ن لكـــــــا

بـــــــــ و ن

لمو مــو د و

XIV.

a

مر سلم هي حتى

مطلع الفجر

بسم الله الر

1 Bl. Sur. 97. v. 4.
bis Sur. 98. v. 1.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. ¼ 9. Jh. / s.N. Zainaddin

Cod. Mixt. 814

15. **XV.**

Cod. Mixt. 814

Maracci vide pagina 821.
Suretul Humese mekkijet
ajat. dokuz ajat. 104 hise

بسم الله الرحمن الرحيم

بسم الله الر
حمن الرحيم
ويل لكل همـ
زة لمزة ⁂ الذ
ي جمع مالا و

1 Bl. Sur. 10
v. 1 bis 5.

[illegible] دده ۝ يحسب
ان ماله اخلد
ه ۝ كلا لينبذن
[illegible] الحطمه ۝
[illegible] ما ادر

XVI.

16.

Marac: p. 822. Sura 105ta

El fîl chamse ajât. الفيل خمس ايات 5. ajât.

e

الفيل خمس ايت

بسم الله الر
حمن الرحيم
الم تر كيف

Bismillah

1 Bl. Anfang und v. 1. von Sur. 105.

Cod. Mixt. 814

XVII. i.

فر لذن
بك وسبح ب
حمد ربك
بالعشي والابكا
ر ان الذين

No. 47

8 Bl. Sur. 40. v. 57 bis 64.

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

كـ
فا
ا
ن
لسمـ

ا حكـ لو ذ فى
ن ا جـ ا لله
سو سطين ا بسمه
ا كـ
و د فحمه ا لا

Nationalbibl

XVII. 2.

كو . ما هم سلسه
فا سنبح با لله
با له هو السمع
ا لسطو سلو ا
لسموت و ا

4

لا د ٮٮں احو

م حو للا ٮر و

ٮكر ا كو ں ا

لٮا ٮر لا سلمو ں و

ما ر ٮسو ء ا لا

Bibliothek

لا ه حں اں حو
م حٮو كلا ٮرو
ٮ ر ٮكں كو ا
لٮا ٮر ر لا سلمو ز و
ما ٮر ٮسو ء ا لا

XVII 3

بحفى و البطو
و ىى لك ير امو
ا و عملوا لا
لطلحت و
لا ا لصى فلا ما

ـذكرون ان
الساعة لاتية
لا ريب فيها
ولكن اكـ
ـثر الناس لا يو

National-Bibliothek

XVII. 4.

منون وقال ر
بكم ادعو
ني استجب لكم
ان الذين يستكبر
ون عن عباد

ى سيدخلون
جهنم داخرى
ن الله الذى
جعل لكم اليل
لتسكنوا فيه

و النهار

XVII.5.

والنهار مبصـ
ـرا ان الله لذ
و فضل على النا
س ولكن اكثـ
ـر الناس لا يشكرو

والنهار

10

ون ذ لكم
ا لله ر بكم
خا لق كل سى
لا ا له ا لا هو
فا نى تو فكو ن

XVII.6.

صــــكــــلطا

و فــــا الد

ز كــا و ا نا

بــــــا الله حـخ

و ز ا لله ا لك

٤٦

ى جعل لكم
الارض
قرارا وا
لسما بنا و صو
ركم فاحسن

XVII. 7.

صوركم
ورزقكم
من الطيبت ذ
لكم الله ربكم
فتبرك الله

رب العلمين
هو الحى لا اله الا
هو فاد
عوه مخلصين
له الدين الحمد

XVII. 8.

15

لله د ـسالا

لمن ول ابى هسـ

ان لن حسد ا

لد د نر لـعو د

مر كفر با لا

لقا جا ٮو ٮالسـ

م د ٮو ٮا هـ

ط ـٮـ ر ٮاسلـه

ر ٮـ ٮاسلص

فو الصو حلقه

مل ٣٢ ب

1. **XVIII. i.**

الله اليكم فلما زاغوا ا
زاغ الله قلوبهم والله
لا يهدي القوم الفسقين وا
ذ قال عيسى ابن مريم يبني اسر
ءيل اني رسول الله اليكم

18

5 bl. Sur. 61. v. 5 bis Sur. 62. v. 5.

4

الذي ارسل رسوله بالهدى
ودين الحق ليظهره على الد
ين كله ولو كره المشركون
يايها الذين امنوا هل ادلكم
على تجرة تنجيكم من عذاب ا

6.

تجري من تحتها الانهر ومسكن
طيبة في جنت عدن ذلك
الفوز العظيم واخرى تحبو
نها نصر من الله وفتح قريب
وبشر المؤمنين يايها الذين ا

amenu

XVIII. 2.

2

الزب

XVIII. 3.

5

Cod. Mixt. 814

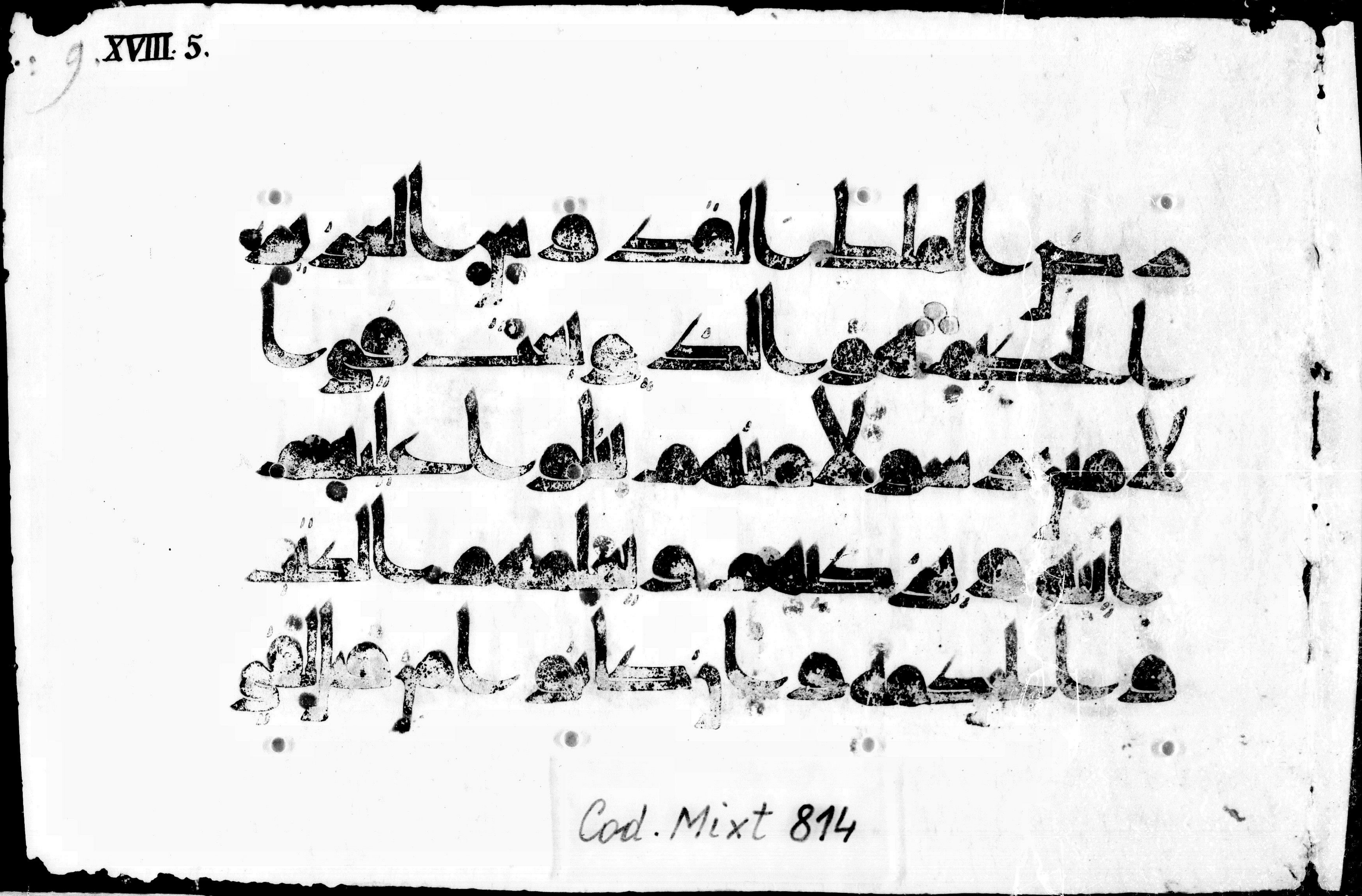

9 XVIII. 5.

وما في الارض الملك القدوس العزيز
الحكيم هو الذي بعث في الا
لاميين رسولا منهم يتلوا عليهم
اياته ويزكيهم ويعلمهم الكتب
والحكمة وان كانوا من قبل لفي

Cod. Mixt 814

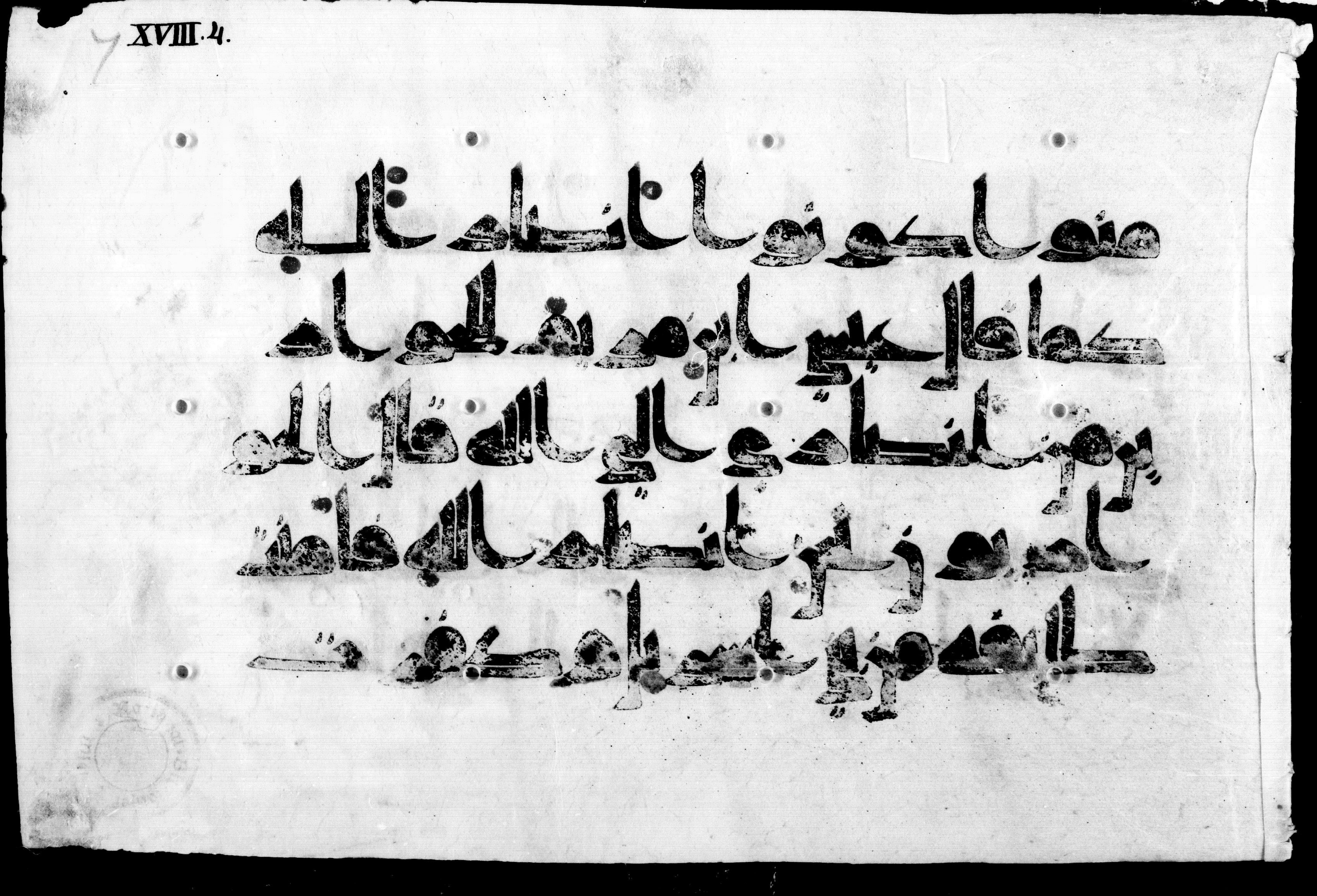

7 XVIII. 4.

منوا كونوا انصار الله
كما قال عيسى ابن مريم للحوار
يين من انصاري الى الله قال الحو
اريون نحن انصار الله فامنت طا
يفة من بني اسريل وكفرت

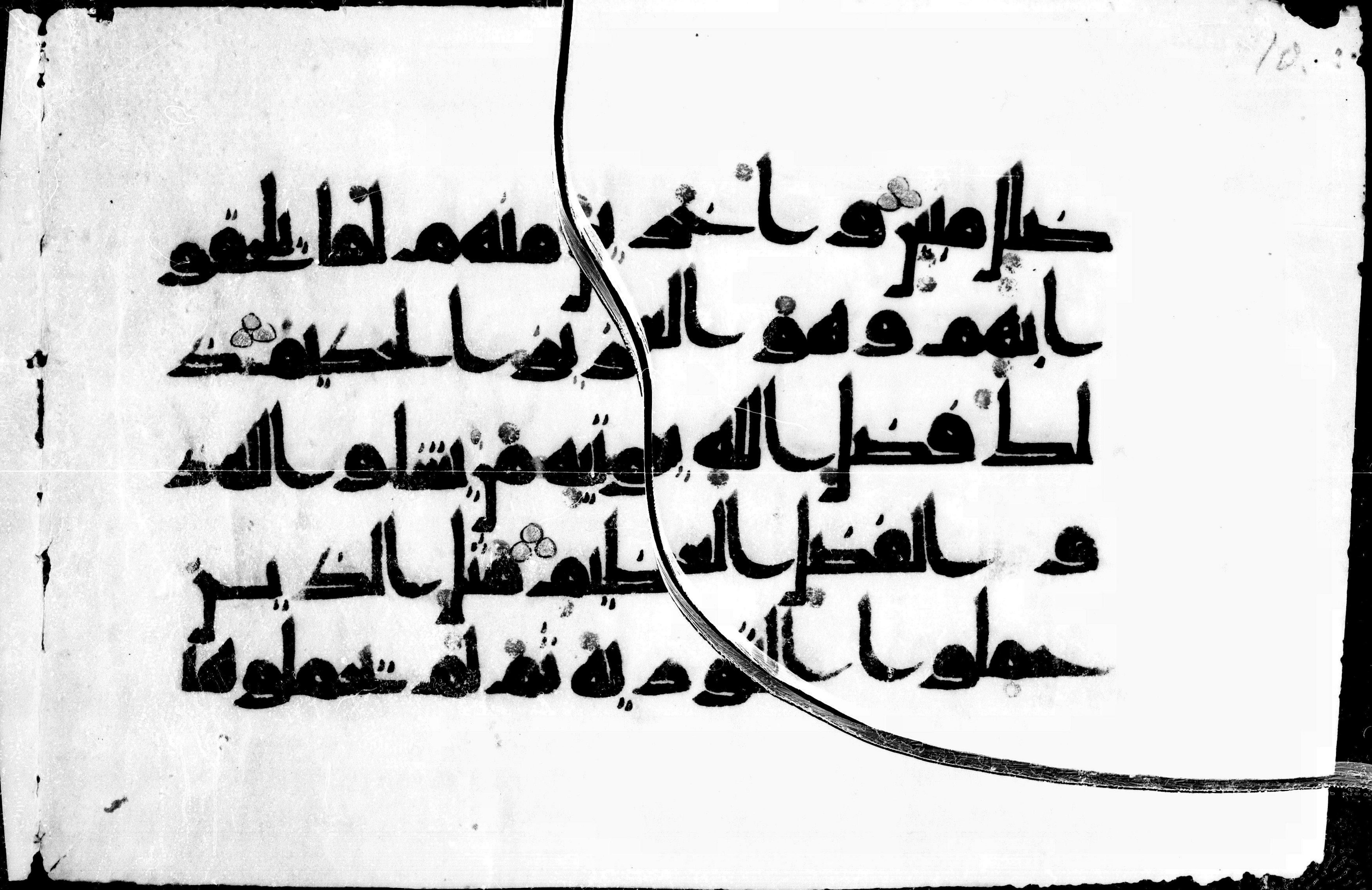

10.

ضلل مبين وءاخرين منهم لما يلحقو
ا بهم وهو العزيز الحكيم ذ
لك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذ
و الفضل العظيم مثل الذين
حملوا التورىة ثم لم يحملوها

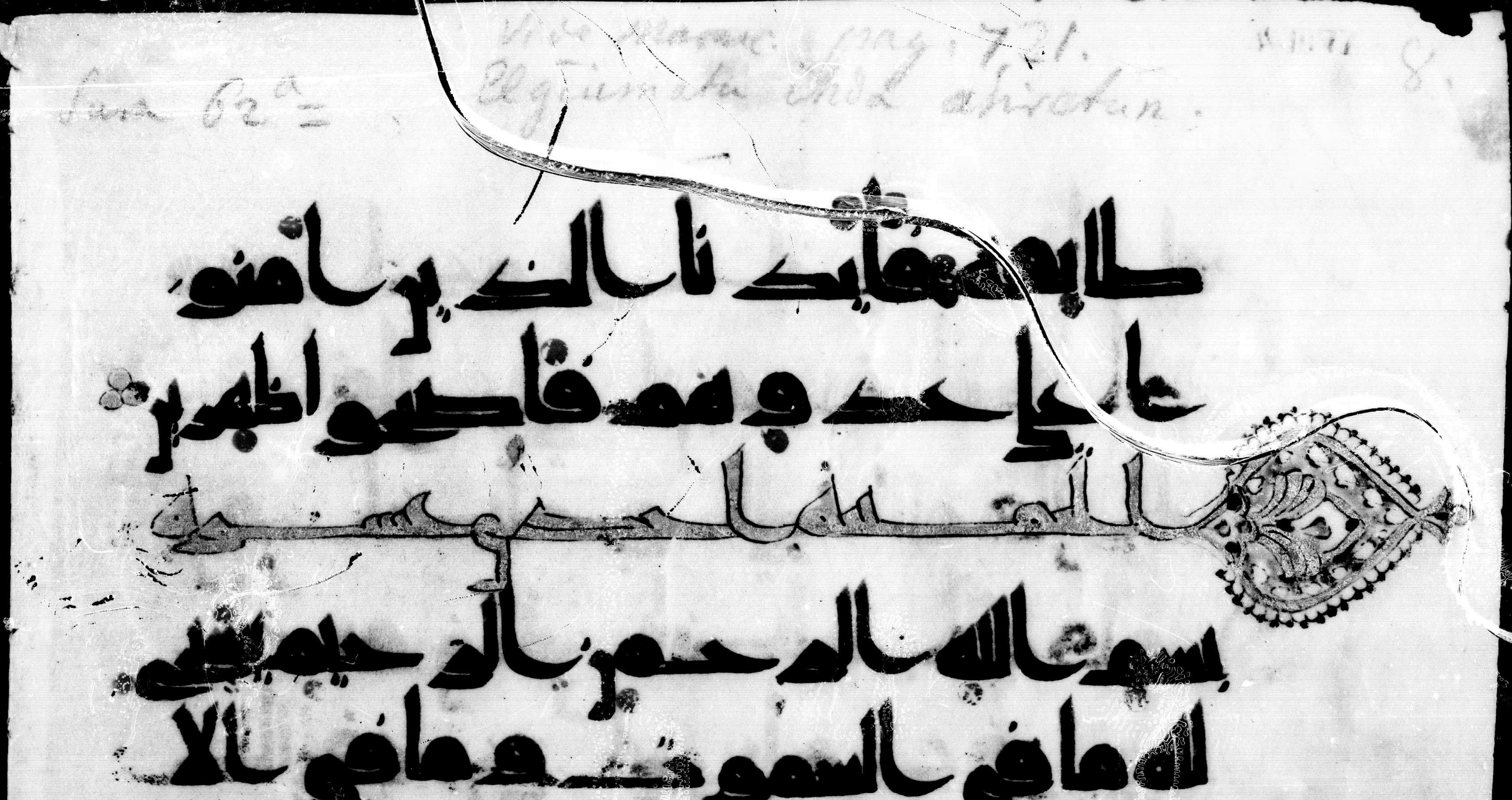

Sura 62ª =

Vide Marac. pag. 721.
Elgiumatu ihdi ahiratun.

8.

طايفة فايدنا الذين ءامنو
ا على عدوهم فاصبحوا ظهرين
سورة الجمعة احدى عشرة ءاية
بسم الله الرحمن الرحيم يسبح
لله ما في السموت وما في الأر

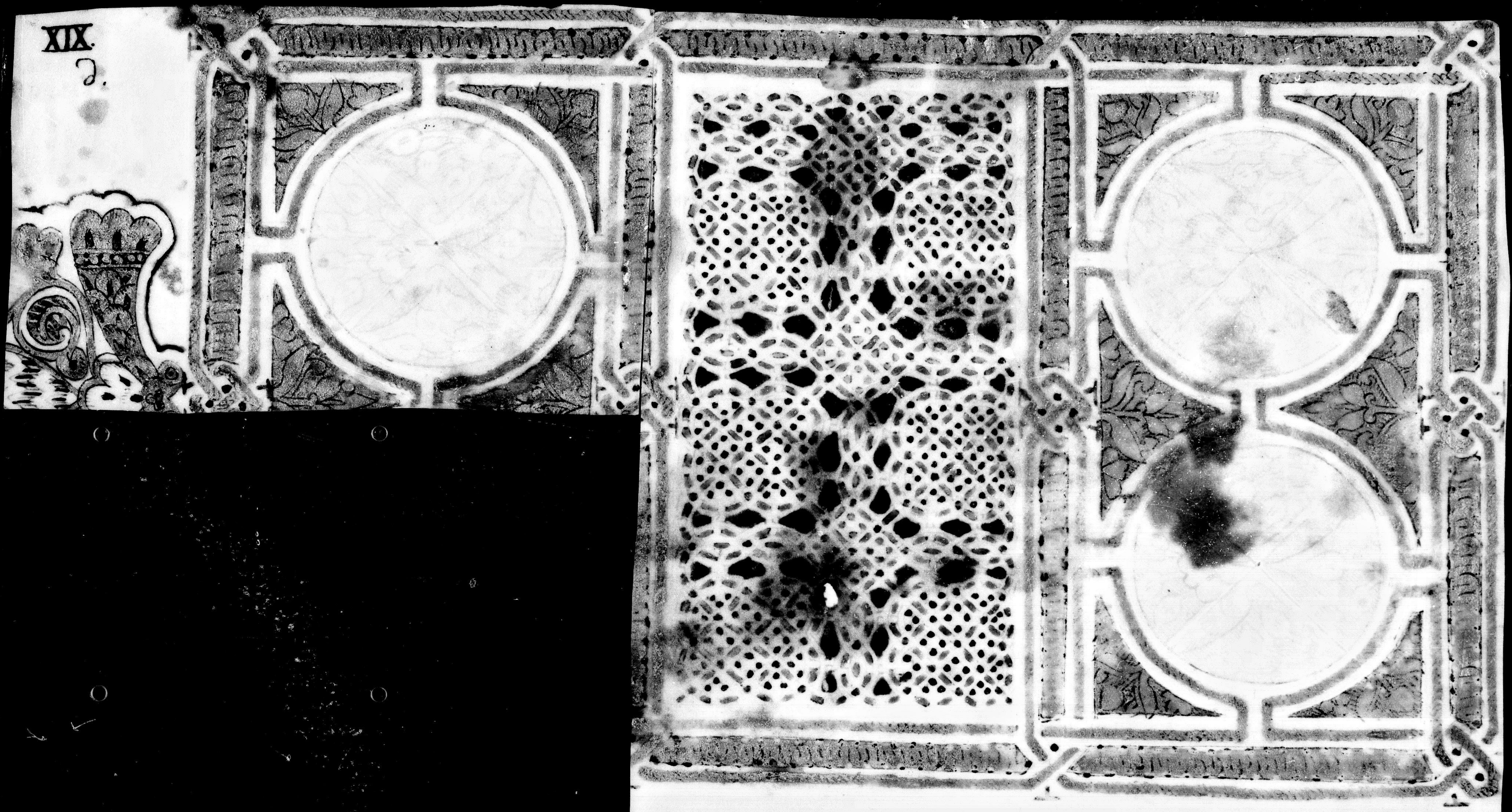

XIX. 2.

XIX 1.

13-19

XIX.

19 a

4 Stück Verzierungen

a b c d

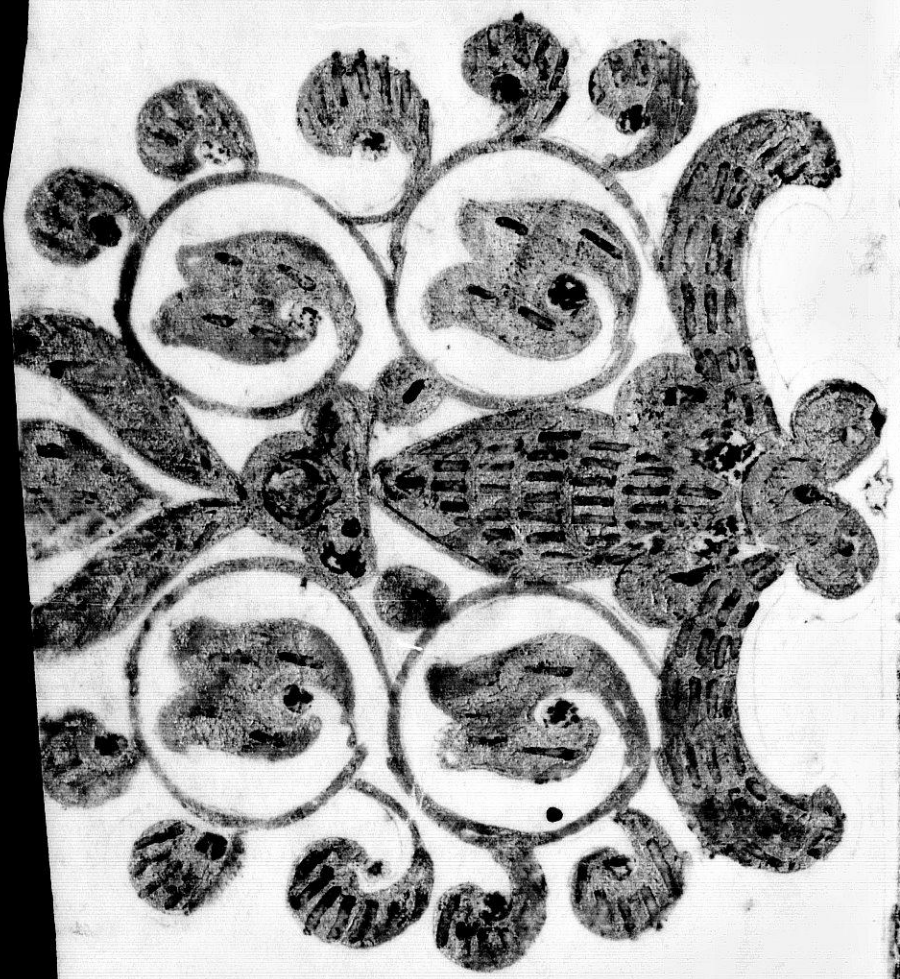

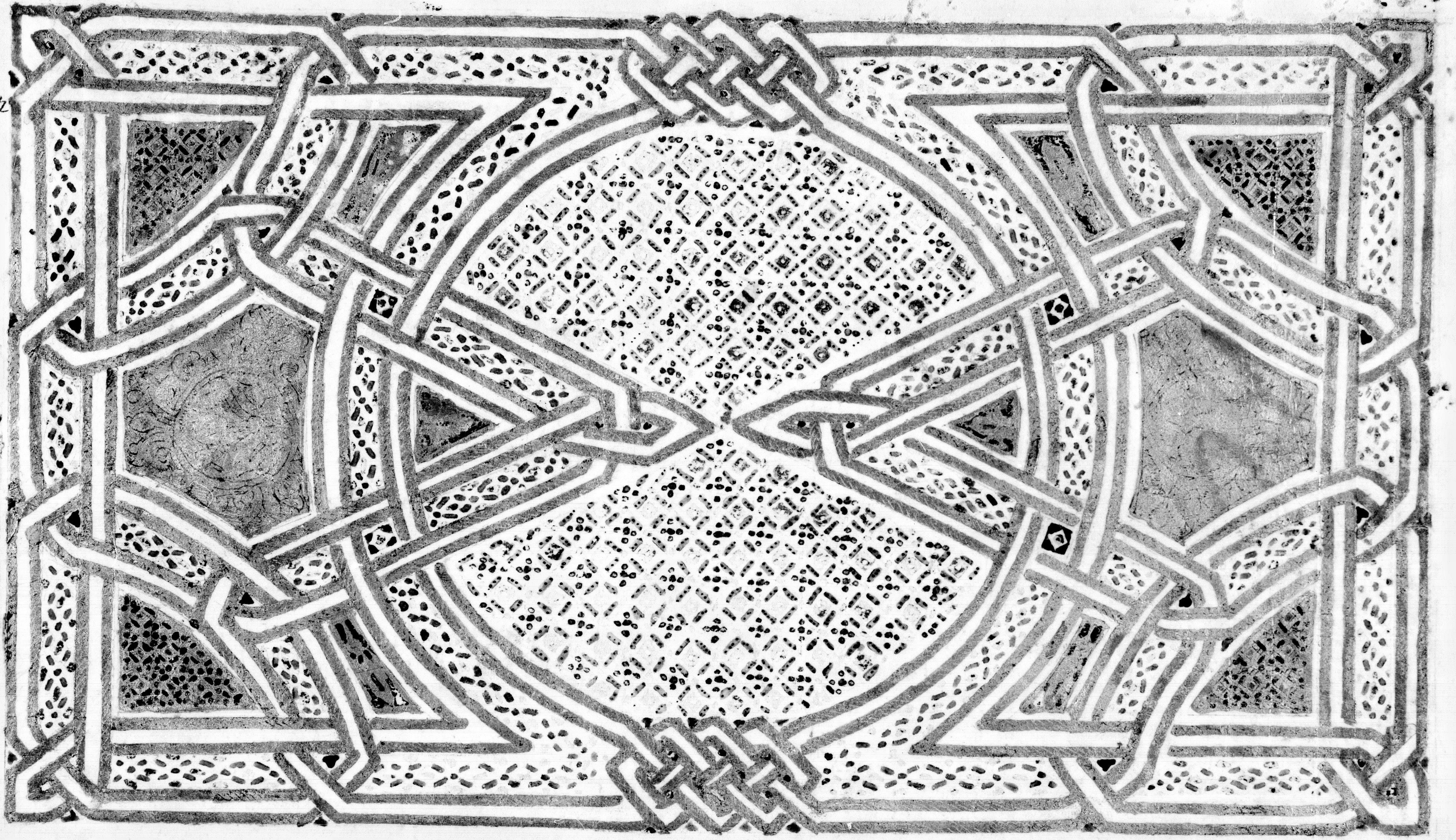

XIX

b.

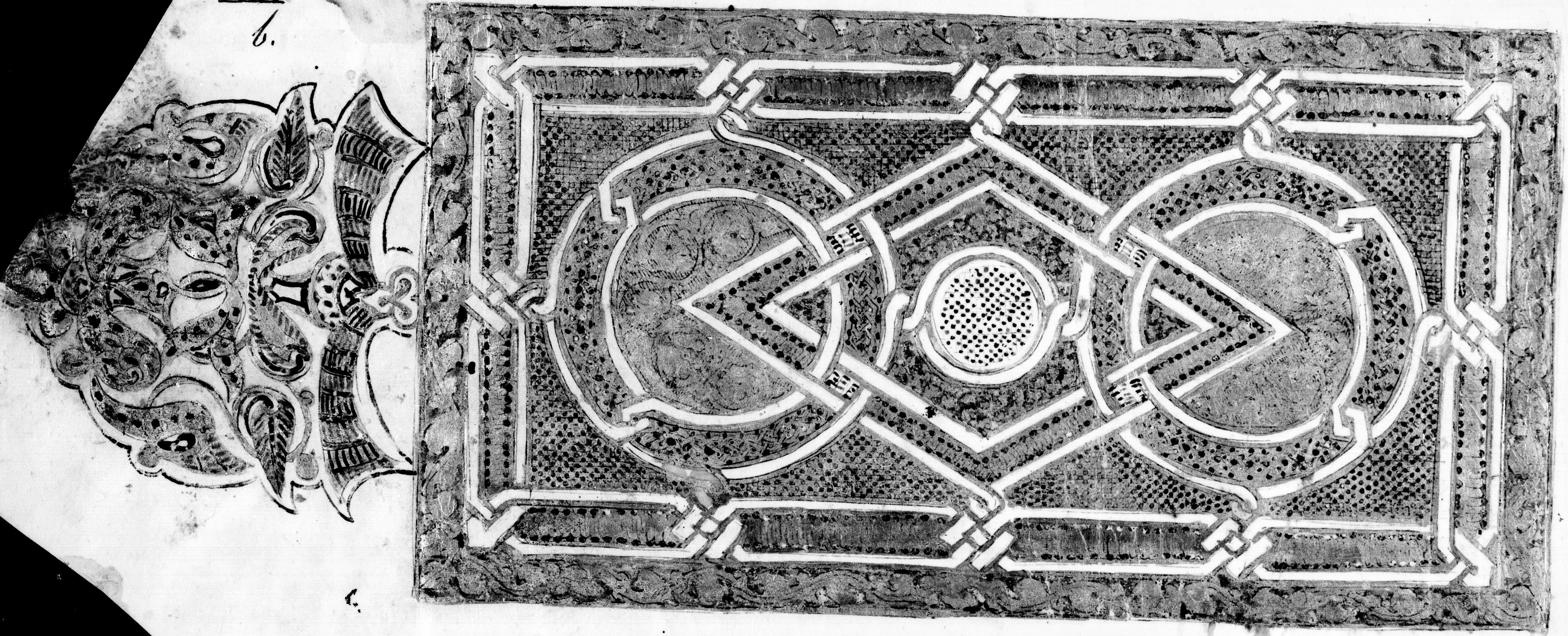

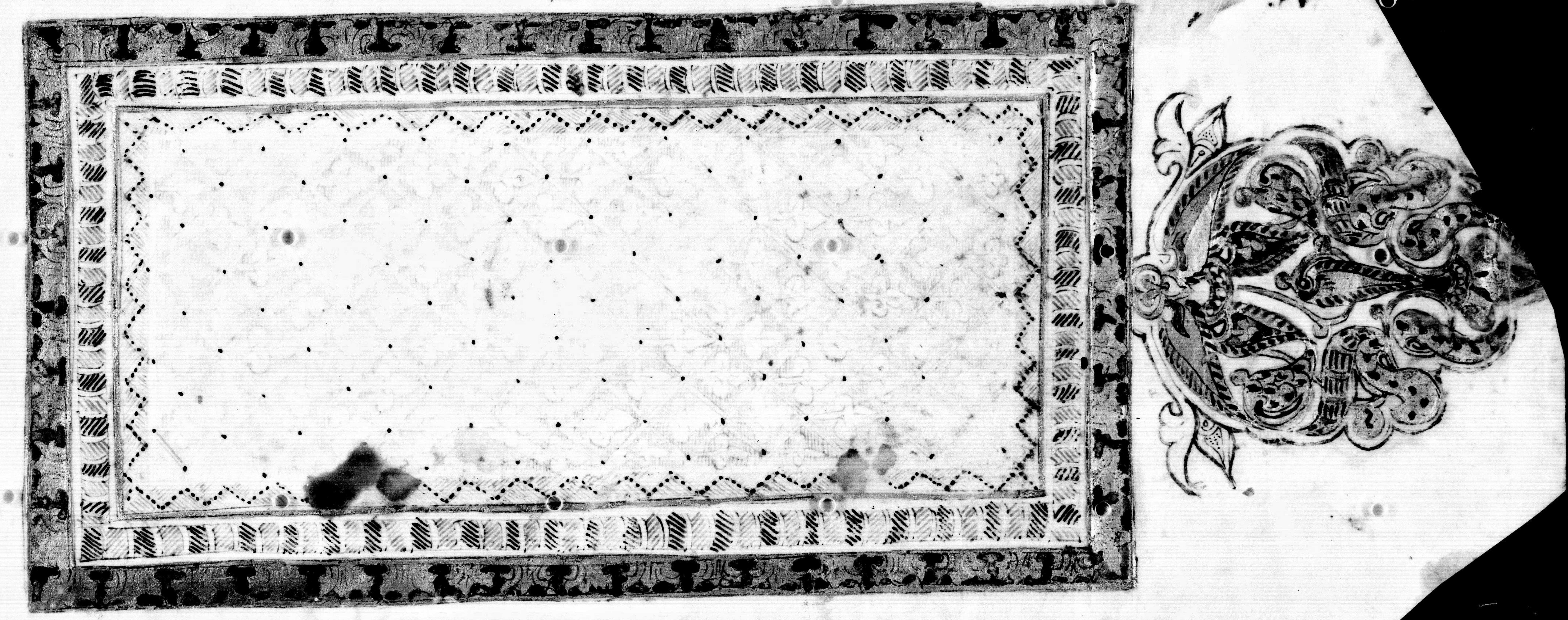

Cod. Mixt. 814